इकाई 9 कल्प

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 कल्प

9.3 ऋग्वेद के कल्पसूत्र

- 9.3.1 ऋग्वेद के श्रौतसूत्र
- 9.3.2 ऋग्वेद के गृह्यसूत्र
- 9.3.3 ऋग्वेद के धर्मसूत्र
- 9.3.4 ऋग्वेद के शुल्बसूत्र

9.4 यजुर्वेद के कल्प सूत्र

- 9.4.1 यजुर्वेद के श्रौतसूत्र
- 9.4.2 यजुर्वेद के गृह्यसूत्र
- 9.4.3 यजुर्वेद के धर्मसूत्र

9.5 सामवेद के कल्प सूत्र

- 9.5.1 सामवेदीय श्रौतसूत्र
- 9.5.2 सामवेदीय गृह्यसूत्र
- 9.5.3 सामवेदीय धर्मसूत्र

9.6 अथर्ववेद के कल्प सूत्र

9.7 सारांश

9.8 शब्दावली

9.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

9.10 अभ्यास प्रश्न

9.0 उद्देश्य

इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- कल्प वेदाङ्ग का अध्ययन कर सकेंगे।
- श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र आदि के प्रतिपाद्य विषय को समझ सकेंगे।
- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद के अन्तर्गत परिगणित श्रौतसूत्रों, गृह्यसूत्रों आदि का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- यज्ञीय विधानों को समझ सकेंगे।
- इकाई से सम्बद्ध पारिभाषिक पदों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

9.1 प्रस्तावना

प्रिय विद्यार्थियों! MSK005 'वैदिक वाङ्मय एवं भारतीय संस्कृति और सभ्यता' पाठ्यक्रम की इस इकाई में आप कल्प वेदांग का अध्ययन करेंगे। आप जानते हैं कि वेदांग छः हैं – शिक्षा, व्याकरण, छन्द, निरुक्त, ज्योतिष और कल्प।

शिक्षा व्याकरणं छन्दो निरुक्तं ज्योतिषं तथा।
कल्पश्चेति षडङ्गानि वेदस्याहुर्मनीषिणः।।

वेद शब्द विद् धातु से घञ् प्रत्यय लगाने पर निष्पन्न होता है। विद् धातु के चार अर्थ हैं – विद् ज्ञाने, विद् विचारणे, विद् सत्तायाम्, विदलृ लाभे। आप जानते हैं कि वेद चार हैं – ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। इन वेदों के अध्ययन के लिए हमें वेदांगों की आवश्यकता होती है। वेदांगों के माध्यम से हम वेदों के वास्तविक अर्थ को जानते हैं। पतंजलि ने वेदांगों के महत्त्व को इस प्रकार स्पष्ट किया है – **ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडङ्गों वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च।'** इकाई छः एवं सात के माध्यम से आपने शिक्षा, व्याकरण, छन्द, निरुक्त और ज्योतिष इन पाँच वेदांगों के महत्त्व, वर्ण्य-विषय एवं प्रयोजन के विषय में अध्ययन किया। इस इकाई में आप कल्प वेदांग के अन्तर्गत परिगणित श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र एवं शुल्बसूत्र के विषय में अध्ययन करेंगे।

9.2 कल्प

षड् वेदांगों में कल्प वेदांग का विशेष महत्त्व है। कल्प वेदांग को वेद पुरुष का हाथ स्वीकार किया गया है – **हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।** आचार्य सायण के अनुसार जिन ग्रन्थों में यज्ञसम्बन्धी विधियों का समर्थन अथवा प्रतिपादन किया जाता है उन्हें कल्प कहते हैं –

कल्पयते समर्थ्यते यागप्रयोगोऽत्र इति व्युत्पत्तेः। (सायण)

ऋग्वेदप्रातिशाख्य की टीका में विष्णुमित्र ने कहा है कि जिन ग्रन्थों में वैदिक कर्मो का सांगोपांग विवेचन किया जाता है, उन्हें कल्प कहते हैं –

वेदविहितानां कर्मणां आनुपूर्व्येण कल्पनाशास्त्रम्।

अर्थात् वेदों में वर्णित यज्ञों के समस्त विधि-विधान का जिन ग्रन्थों में वर्णन प्राप्त होता है, उन्हें हम कल्प कहते हैं। यह ग्रन्थ सूत्रशैली में लिखे गए हें, अतः इन्हें सूत्र भी कहते हैं।

वैदिक काल में यज्ञ की प्रधानता थी। उस समय यज्ञों के नियम अत्यन्त विस्तृत एवं कठोर थे। परिणमतः इनके व्यावहारिक प्रयोग को सरल और सुगम बनाने की आवश्यकता प्रतीत हुई। इन्हीं आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु कल्प सूत्रों का निर्माण किया गया है। कल्पसूत्र चार हैं – श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र और शुल्बसूत्र।

श्रौतसूत्र – श्रौत का तात्पर्य है श्रुति प्रतिपादित या वेदों में वर्णित। श्रौत शब्द की निष्पत्ति श्रुत शब्द से हुई है। वेदों में वर्णित यज्ञ-याग विधियों का विवेचन ही श्रौतसूत्र का विषय है। इन सूत्रों में यज्ञ के प्रारम्भ से लेकर अन्तिम चरण तक के करणीय

कार्यों का क्रमानुसार वर्णन वर्णित है। इनमें मुख्यतः दर्शपूर्णमास, सोमयाग, वाजपेय, राजसूय आदि यज्ञों से सम्बन्धित विधियों का वर्णन प्राप्त होता है।

गृह्यसूत्र – गृह्यसम्बन्धी यज्ञों तथा उत्सवों आदि से सम्बन्धित विधियों का वर्णन करना गृह्यसूत्रों का प्रतिपाद्य है। इन गृह्यसूत्रों में जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त किए जाने वाले षोडश संस्कारों का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त पंच महायज्ञ, सात पाकयज्ञ, गृह निर्माण, गृह प्रवेश, पशुपालन और कृषिकार्य आदि से सम्बन्धित यज्ञ विधियों का वर्णन इन गृह्यसूत्रों में किया गया है।

धर्मसूत्र – धर्मसूत्रों का सम्बन्ध आचारशास्त्र से है। इनमें सामाजिक व्यवस्था और वर्णश्रम धर्म का विस्तृत विवेचन किया गया है। इनमें वर्णाश्रम के कर्तव्यों, आचार-विचार, मान्यताओं और सामाजिक जीवन के करणीय और अकरणीय कर्तव्यों का वर्णन किया गया है। इस प्रकार आचरण की दृष्टि से धर्मसूत्रों का विशेष महत्त्व है।

षुल्बसूत्र – शुल्बसूत्र मुख्यतः गणितशास्त्र से सम्बन्धित वैज्ञानिक ग्रन्थ है। शुल्ब का अर्थ है रज्जु अर्थात् रज्जु के द्वारा मापी गई वेदों की रचना शुल्बसूत्रों का प्रतिपाद्य विषय है। इन सूत्रों में छोटी-बड़ी सभी प्रकार की वेदियों के निर्माण की विधि दी गई है।

9.3 ऋग्वेद के कल्पसूत्र

इकाई के इस अंश में आप ऋग्वेद के कल्पसूत्रों का अध्ययन करेंगे।

9.3.1 ऋग्वेद के श्रौतसूत्र

1. **आश्वलायन श्रौतसूत्र** – इसके रचयिता आश्वलायन ऋषि हैं। इसका सम्बन्ध ऋग्वेद की शाकल और बाष्कल दोनों शाखाओं से है। इसमें 12 अध्याय हैं। दर्शपूर्णमास, अग्निहोत्र, आग्रयण इष्टि, सौत्रामणी, ज्योतिष्टोम, सत्रयाग, एकाह आदि विषय इसमें वर्णित हैं। इन श्रौतयागों में होता, मैत्रावरुण, अच्छावाक और ग्रावस्तुत ऋत्विज् हैं। इनमें इन ऋत्विजों के कार्यकलापों का वर्णन है।
2. **शांखायन श्रौतसूत्र** – यह श्रौतसूत्र शांखायन ब्राह्मण पर आश्रित है। इसके रचयिता शांखायन ऋषि हैं। इसमें 18 अध्याय हैं। दर्शपूर्णमास, अग्निहोत्र, अग्निष्टोम, अतिरात्र, अश्वमेध, हविर्याग, वाजपेय, राजसूय, पुरुषमेध आदि विषय वर्णित हैं। इसकी शैली ब्राह्मण ग्रन्थों के समान है परिणामतः यह श्रौतसूत्र अत्यन्त प्राचीन माना जाता है।

9.3.2 ऋग्वेद के गृह्यसूत्र

आश्वलायन गृह्यसूत्र – इसके रचयिता आश्वलायन ऋषि हैं। यह गृह्यसूत्रों में प्राचीनतम माना जाता है। इसमें चार अध्याय हैं जिनमें पाकयज्ञ, पुंसवन, जातकर्म, मुण्डन आदि संस्कारों, श्रावणकर्म, वास्तु निर्माण, गृह प्रवेश, पंच महायज्ञ, उपकर्म, दाहकर्म आदि विषय वर्णित हैं।

शांखायन गृह्यसूत्र – यह ऋग्वेद की बाष्कल शाखा से सम्बन्धित है। इसके रचयिता सुयज्ञ हैं। इसमें छः अध्याय हैं। इसके प्रारम्भिक चार अध्यायों में गृह्यसूत्रों में वर्णित विषयों का उल्लेख है। पंचम अध्याय में कूप, तडाग, उद्यान आदि की स्थापना

का वर्णन है। षष्ठ अध्याय में वैदिक संहिताओं और उपनिषदों आदि के अध्ययन के नियम हैं।

कौषीतकि गृह्यसूत्र – इसके रचयिता शाम्भव्य अथवा शांबव्यं हैं। इसमें पाँच अध्याय हैं। इसके प्रारम्भिक चार अध्यायों के विषय शांखायन गृह्यसूत्र के समान हैं। इसके अन्तिम अध्याय में अन्त्येष्टि का वर्णन है।

9.3.3 ऋग्वेद के धर्मसूत्र

ऋग्वेद के दो धर्मसूत्र प्राप्त होते हैं – वासिष्ठ, विष्णु।

वासिष्ठ धर्मसूत्र – यह महर्षि वसिष्ठ की रचना है। विभिन्न संस्करणों में इसके अध्यायों की संख्या 6, 10, 20, 30 है। इसके 24-28 अध्यायों में प्राणायाम की प्रशंसा की गई है। इसमें सदाचार पर बहुत बल दिया गया है।

श्वष्णु धर्मसूत्र – यह गद्य-पद्य मिश्रित है। इसके 160 श्लोक मनुस्मृति से अक्षरशः मिलते हैं। इसमें अधिकांश श्लोक मनुस्मृति से ही लिए गए हैं। इसमें याज्ञवल्क्य स्मृति, गौतम धर्मसूत्र और वासिष्ठ धर्मसूत्र के भी श्लोक एवं सूत्र प्राप्त होते हैं।

9.3.4 ऋग्वेद के शुल्बसूत्र

वैदिक परम्परा में यागादि अनुष्ठान को ही धर्म माना गया है। यह यज्ञ-यागादि का अनुष्ठान जिस वेदी पर होता है उसके निर्माण का विधान इन शुल्बसूत्रों में प्राप्त होता है। शुल्बसूत्र ज्यमितिशास्त्र के प्राचीनतम स्वरूप का प्रतिपादन करते हैं। शुल्बसूत्रों की दृष्टि से यजुर्वेद की ग्रन्थ-परम्परा समृद्ध है। ऋग्वेद का कोई शुल्बसूत्र वर्तमान में उपलब्ध नहीं होता है।

9.4 यजुर्वेद के कल्पसूत्र

कल्पसूत्रों की दृष्टि से यजुर्वेद की ग्रन्थ-परम्परा अन्य वेदों की अपेक्षा अधिक समृद्ध है। यजुर्वेद में भी शुक्ल यजुर्वेद की अपेक्षा कृष्ण यजुर्वेद के श्रौतसूत्रों की संख्या अधिक है। यजुर्वेद के निम्नलिखित कल्पसूत्र हैं –

शुक्लयजुर्वेदीय कल्पसूत्र –
शुक्लयजुर्वेदीय श्रौतसूत्र –कात्यायन श्रौतसूत्र
शुक्लयजुर्वेदीय गृह्यसूत्र –पारस्कर गृह्यसूत्र
शुक्लयजुर्वेदीय धर्मसूत्र –हारीत तथा शंखधर्मसूत्र
शुक्लयजुर्वेदीय शुल्बसूत्र –कात्यायन शुल्बसूत्र
कृष्णयजुर्वेदीय कल्पसूत्र –
कृष्णयजुर्वेदीय श्रौतसूत्र –बौधायन, आपस्तम्ब, हिरण्यकेशी, वैखानस, भारद्वाज, वाधूल, वाराह और मानव श्रौतसूत्र।
कृष्णयजुर्वेदीय गृह्यसूत्र –बौधायन, आपस्तम्ब, मानव, भारद्वाज, काठक, आग्निवेश्य, हिरण्यकेशी, वाराह और वैखानस गृह्यसूत्र।
कृष्णयजुर्वेदीय धर्मसूत्र –बौधायन, आपस्तम्ब, वैखानस, मानव।
कृष्णयजुर्वेदीय शुल्बसूत्र –बौधायन, आपस्तम्ब, मानव, मैत्रायणीय, वाराह एवं वाधूल शुल्बसूत्र

यहाँ यजुर्वेद के कतिपय प्रतिनिधि कल्पसूत्रों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत है।

9.4.1 यजुर्वेद के श्रौतसूत्र

क) शुक्ल यजुर्वेद के श्रौतसूत्र –

1. **कात्यायन या पारस्कर श्रौतसूत्र** – श्रौतसूत्र साहित्य में इसे प्रतिनिधि ग्रन्थ माना गया है। यह शुक्ल यजुर्वेद से सम्बद्ध है। इसमें कुल छब्बीस अध्याय हैं। इसमें मुख्य रूप से श्रौत यागों का वर्णन प्राप्त होता है। इस श्रौतसूत्र का मुख्य उपजीव्य शतपथ ब्राह्मण है किन्तु अन्तिम तीन अध्यायों का आधार ताण्ड्य महाब्राह्मण है।

   इसके प्रथम अध्याय में 10 कण्डिकाओं में याग सम्बन्धी अनेक विषय वर्णित हैं। द्वितीय तथा तृतीय अध्याय में दर्शपूर्णमासयाग का वर्णन है। चतुर्थ अध्याय में पिण्डपितृयज्ञ, दाक्षायण, आग्रयण, अग्न्याधान, पुनराधान, अग्न्युपस्थान और अग्निहोत्र का वर्णन है। पंचम अध्याय में चातुर्मास्य, मित्रविन्द इष्टि का वर्णन है। षष्ठ अध्याय में निरूढ पशुबन्ध का वर्णन है। सप्तम से दशम अध्याय में अग्निष्टोम याग का वर्णन है। ग्यारहवें अध्याय में ब्रह्म नामक ऋत्विक् के कर्तव्य का वर्णन है। द्वादश अध्याय में द्वादशाह का वर्णन है। त्रयोदश अध्याय में गवानयन का वर्णन है। चर्तुदश अध्याय में वाजपेय याग का वर्णन है। पञ्चदश अध्याय में राजसूय याग का वर्णन है। षोडश से एकोनविंशति अध्याय तक अग्निचयन, सौत्रामणि याग का वर्णन है। विंशति अध्याय में अश्वमेध याग का वर्णन है। एकविंशति अध्याय में पुरुषमेध, सर्वमेध, पितृमेध का वर्णन है। द्वाविंशति से चतुर्विंशति अध्याय तक एकाह, अहीन और सत्र का वर्णन है। पञ्चविंशति अध्याय में प्रायश्चित्त का वर्णन है। षड्विंशति अध्याय में प्रवर्ग्य का वर्णन है।

2. **कातीय/कात्यायन/पारस्कर गृह्यसूत्र** – गृह्यसूत्रों में पारस्कर गृह्यसूत्र अपने वर्ण्य-विषय एवं प्रभूत टीका-सम्पत्ति के कारण विद्वज्जगत में अत्यन्त समादरणीय है। यह शुक्ल यजुर्वेद से सम्बद्ध है। यह ग्रन्थ तीन काण्डों में विभक्त है। प्रथम काण्ड में आवसथ्य अग्न्याधान, विवाह से लेकर अन्नप्राशन तक के संस्कारों का वर्णन है। चूड़ाकरण, उपनयन, समावर्तन, पञ्चमहायज्ञ आदि का वर्णन द्वितीय काण्ड में तथा अन्तिम तृतीय काण्ड में श्राद्ध एवं प्रायश्चित्त की विधियों का वर्णन है। इस सूत्रग्रन्थ पर रचित टीका/भाष्य ग्रन्थों का विवरण निम्नानुसार है –

गृह्यसूत्रभाष्य के टीकाकार कर्क हैं। सज्जनवल्लभ भाष्य के टीकाकार जयराम हैं। गृह्यसूत्रव्याख्यान के हरिहर हैं। गृह्यभाष्य के टीकाकार गदाधर हैं। गृह्यसूत्रप्रकाशिका के टीकाकार विश्वनाथ हैं।

ख) कृष्ण यजुर्वेद के श्रौतसूत्र –

1. **बौधायन श्रौतसूत्र** – प्राचीन श्रौतसूत्रों में इसका स्थान सर्वोपरि है। यह श्रौतसूत्र 30 प्रश्नों (अध्यायों) में विभक्त है। दर्शपूर्णमास याग, अग्न्याधेय, अश्वमेघ औपनवाक्य द्वादशाह, अतिरात्र, एकाह आदि इस श्रौतसूत्र के मुख्य वर्ण्य-विषय हैं।

2. **आपस्तम्ब श्रौतसूत्र** – कृष्ण यजुर्वेद से सम्बद्ध यह कल्पसूत्र तीस प्रश्नों या अध्यायों में विभक्त है। आरम्भ के तेइस प्रश्न (अध्याय) श्रौतसूत्र के रूप में मान्य

हैं। इसका सत्ताइसवाँ प्रश्न गृह्यसूत्र है। इसमें विवाह, उपनयन, समावर्तन, मधुपर्क, सीमन्तोन्नयन आदि संस्कारों का वर्णन प्राप्त होता है। 28-29 प्रश्नों में ब्रह्मचर्य, भोजन-विचार, प्रायश्चित्त आदि उपयोगी विषयों का वर्णन प्राप्त होने से यह भाग धर्मसूत्र कहलाता है। अन्तिम तीसवाँ प्रश्न शुल्बसूत्र है। मध्य में 24 से 26 प्रश्नों में गृह्यकर्म से सम्बद्ध मन्त्रों का संकलन किया गया है। इस प्रकार यह अपने आप में एक सम्पूर्ण कल्पसूत्र है।

3. **हिरण्यकेशी श्रौतसूत्र** – इस श्रौतसूत्र में 24 प्रश्न (अध्याय) हैं। इसका वर्ण्य विषय प्रायः वौधायन के समान है। इसमें श्रौत कृत्यों के मध्य में गृह्यसूत्र भी दिए गए हैं।

4. **वैखानस श्रौतसूत्र** – यह शुक्ल यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा से सम्बद्ध है। इस पर वौधायन, आपस्तम्ब और सत्याषाढ तीनों श्रौतसूत्रों का प्रभाव परिलक्षित होता है। इसमें 32 अध्याय हैं। इसका वर्ण्य-विषय प्रायः वौधायन के तुल्य है। इसमें अश्वमेघ का निरूपण नहीं है।

5. **भारद्वाज श्रौतसूत्र** – यह श्रौतसूत्र तैत्तिरीय शाखा से सम्बद्ध है। इसमें तैत्तिरीय संहिता से अनेक मन्त्र उद्धृत हैं। दर्शपूर्णमास, अग्न्याधेय, अग्निहोत्र, ज्योतिष्टोम आदि इसके वर्ण्य-विषय हैं।

6. **वाधूल श्रौतसूत्र** – यह वौधायन के समान प्राचीन श्रौतसूत्र है। इसमें 15 प्रपाठक हैं। अनुवाक और पटल इसके उपविभाग हैं। अग्न्याधेय, अग्निहोत्र, पुरोडाशी, आग्रयण, पशुबन्ध आदि इसके वर्ण्य-विषय हैं।

7. **वाराह श्रोतसूत्र** – यह मैत्रायणी शाखा से सम्बद्ध है। इसमें तीन अध्याय और उनके उपखण्ड हैं। इसमें प्रथम अध्याय में परिभाषा, यजमान, अग्न्याधेय आदि का वर्णन है। द्वितीय अध्याय में अग्निचयन से सम्बद्ध सामग्री हैं। तृतीय अध्याय में वाजपेयी, द्वादशाह, गवामयन, राजसूय आदि का वर्णन है।

8. **मानव श्रौतसूत्र** – इसका सम्बन्ध मैत्रायणी शाखा से है। इसमें 5 भाग और 11 अध्याय हैं। दर्शपूर्णमास, अग्निहोत्र, पितृयज्ञ, प्रायश्चित आदि का वर्णन है।

9.4.2 यजुर्वेद के गृह्यसूत्र

क) शुक्ल यजुर्वेद के गृह्यसूत्र–

1. **कातीय/ कात्यायन /पारस्कर गृह्यसूत्र** – गृह्यसूत्रों में पारस्कर गृह्यसूत्र अपने वर्ण्य-विषय एवं प्रभूत टीका-सम्पत्ति के कारण विद्वज्जगत में अत्यन्त समादरणीय है। यह शुक्ल यजुर्वेद से सम्बद्ध है। यह ग्रन्थ तीन काण्डों में विभक्त है। प्रथम काण्ड में आवसथ्य अग्न्याधान, विवाह से लेकर अन्नप्राशन तक के संस्कारों का वर्णन है। चूड़ाकरण, उपनयन, समावर्तन, पञ्चमहायज्ञ आदि का वर्णन द्वितीय काण्ड में तथा अन्तिम तृतीय काण्ड में श्राद्ध एवं प्रायश्चित्त की विधियों का वर्णन है। इस सूत्रग्रन्थ पर रचित टीका/भाष्य ग्रन्थों का विवरण निम्नानुसार है –

   गृह्यसूत्रभाष्य के टीकाकार कर्क हैं। सज्जनवल्लभ भाष्य के टीकाकार जयराम हैं। गृह्यसूत्रव्याख्यान के हरिहर हैं। गृह्यभाष्य के टीकाकार गदाधर हैं। गृह्यसूत्रप्रकाशिका के टीकाकार विश्वनाथ हैं।

ख) कृष्ण यजुर्वेद के गृह्यसूत्र –

1. **वौधायन गृह्यसूत्र** – इसके रचयिता वौधायन हैं। यह वौधायन कल्पसूत्र का एक विशिष्ट अंश है। इसमें चार प्रश्न हैं। विवाह, गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, उपनयन आदि इसके वर्ण्य-विषय हैं।

2. **मानव गृह्यसूत्र** – यह मैत्रायणी शाखा से सम्बद्ध है। इसके रचयिता आचार्य मानव हैं। इसमें 2 पुरुष (अध्याय) हैं। इनके 41 उपविभाग हैं। ब्रह्मचारी के कर्तव्य, समावर्तन संस्कार, वेदाध्ययनविधि, पंच महायज्ञ इसके वर्ण्य-विषय हैं।

3. **भारद्वाज गृह्यसूत्र** – यह भारद्वाज कल्प सूत्र का एक अंश है। इसमें तीन प्रश्न (अध्याय) हैं। उपनयन, विवाह, पुंसवन, जातकर्म, नामकरण इसके वर्ण्य-विषय हैं।

4. **आपस्तम्ब गृह्यसूत्र** – यह आपस्तम्ब कल्पसूत्र का अंश है। इस कल्पसूत्र में 30 प्रश्न हैं। इनमें 25, 26 और 27 अध्याय गृह्यसूत्र हैं। परिभाषायें, पाकयज्ञ, विवाह, उपाकरण, उपनयन, पुंसवन आदि इसके वर्ण्य-विषय हैं।

9.4.3 यजुर्वेद के धर्मसूत्र

क) शुक्ल यजुर्वेद के धर्मसूत्र –

1. **हारीत धर्मसूत्र** – वौधायन, आपस्तम्ब और वासिष्ठ धर्मसूत्रों में इसका उल्लेख है। इसमें 30 अध्याय हैं। इसमें पद्यात्मक वचन भी हैं। इसमें 8 प्रकार के विवाहों का वर्णन है जिसमें आर्ष एवं प्राजापत्य विवाह को क्षात्र एवं मानुष विवाह की संज्ञा दी गई है।

ख) कृष्ण यजुर्वेद के धर्मसूत्र –

1. **बौधायन धर्मसूत्र** – यह बौधायन कल्पसूत्र का ही अंश है। इसमें इसके चार अध्याय है। इन चार अध्यायों में ब्रह्मचर्य के नियम, दाय भाग, वर्णसंकर, पंच महायज्ञ, श्राद्ध, चान्द्रायण आदि व्रत, प्रायश्चित, काम्य सिद्धियाँ आदि का वर्णन है।

2. **आपस्तम्ब धर्मसूत्र** – आपस्तम्ब कल्पसूत्र के ही अन्त के दो प्रश्न 28 और 29 आपस्तम्ब धर्मसूत्र कहे जाते हैं। इसके रचयिता आपस्तम्ब हैं। इसका वर्ण्य-विषय प्रायः वौधायन धर्मसूत्र के ही समान है।

9.4.4 यजुर्वेद के शुल्बसूत्र

क) शुक्ल यजुर्वेद के शुल्बसूत्र –

1. **कात्यायन शुल्बसूत्र** – इसका सम्बन्ध शुक्ल यजुर्वेद से है। इसके दो भाग हैं। प्रथम भाग सूत्रों में हैं। इसमें 6 कंडिकाओं में 102 सूत्र हैं, इसमें वेदियों के निर्माण के लिए आवश्यक रेखागणितीय निर्देश हैं।

ख) कृष्ण यजुर्वेद के शुल्बसूत्र –

1. **वौधायन शुल्बसूत्र** – इसका सम्बन्ध कृष्ण यजुर्वेद से है। इसके रचयिता वोधायन मुनि हैं। इसमें 3 परिच्छेद हैं जिनमें विविध मानों का वर्णन, यज्ञिय

वेदियों के निर्माण के लिए रेखागणितीय तथ्य, गार्हपत्य चिति और छन्दश्चिति के निर्माण की प्रक्रिया, काम्य इष्टियों के 17 प्रभेदों का वर्णन है।

2. **आपस्तम्ब शुल्बसूत्र** – इसका सम्बन्ध कृष्ण यजुर्वेद से है। इसमें 6 पटल हैं जिनमें 21 अध्याय तथा 498 सूत्र हैं। इसमें रेखागणितीय सिद्धान्तों, वेदियों के क्रमिक स्थान और आकृतियों तथा काम्य इष्टियों के लिए आवश्यक विभिन्न वेदियों के आकार-प्रकार का वर्णन है।

3. **मानव शुल्बसूत्र** – यह गद्य-पद्य मिश्रित एक छोटा शुल्बसूत्र है। इसमें अनेक नवीन वेदियों का वर्णन मिलता है।

9.5 सामवेद के कल्पसूत्र

सामवेद के निम्नलिखित कल्पसूत्र हैं –

- **सामवेदीय श्रौतसूत्र** – लाट्यायन, द्राह्यण, मशक (आर्षेय), खादिर तथा जैमिनीय।
- **सामवेदीय गृह्यसूत्र** – खादिर, गोभिल, गौतम, जैमिनीय।
- **सामवेदीय धर्मसूत्र** – गौतम धर्मसूत्र।
- **सामवेदीय शुल्बसूत्र** – सामवेद का कोई शुल्बसूत्र नहीं है।

9.5.1 सामवेदीय श्रौतसूत्र

यहाँ सामवेद के कुछ प्रमुख श्रौतसूत्रों का वर्णन किया जा रहा है।

1. **आर्षेय कल्प या मषक श्रौतसूत्र** – यह सामवेदीय ताण्ड्य महाब्राह्मण से सम्बद्ध है। इसका कुछ अंश षड्विंश ब्राह्मण से सम्बद्ध है। इसके रचयिता मशक ऋषि माने जाते हैं। इसमें 11 अध्याय हैं। इसमें सोमयाग, ज्योतिष्टोम, पंचरात्र, सप्तरात्र आदि का वर्णन है।

2. **लाट्यायन श्रौतसूत्र** – इस श्रौतसूत्र में 10 प्रपाठक और 2641 सूत्र हैं। इसमें अग्निष्टोम से सम्बद्ध भाग, वाणिभक्षण, एकाह, अहीन, वाजपेय, राजसूय आदि यज्ञों का वर्णन है।

9.5.2 सामवेदीय गृह्यसूत्र

1. **खादिर गृह्यसूत्र** – यह गृह्यसूत्र सामवेद की राणायनीय शाखा से सम्बद्ध है। यह वास्तव में गोभिल गृह्यसूत्र का संक्षिप्त संस्करण है।

2. **गोभिल गृह्यसूत्र** – यह गृह्यसूत्र सामवेद की कौथुम शाखा से सम्बद्ध है। यह सामवेद का सबसे प्राचीन गृह्यसूत्र है। इसमें 4 प्रपाठक हैं जिनमें 39 खण्ड हैं। इनमें सामान्य विधियाँ, होम के अधिकारी, अग्नयाधान, आचमनविधि, विवाह, गर्भाधान, पुंसवन, गोदान, ब्रह्मचारी के कर्म, पितृयज्ञ काम्यकर्म, वास्तुनिर्माण आदि विषय वर्णित हैं।

3. **द्राह्यायण गृह्यसूत्र** – यह खादिर गृह्यसूत्र के समान है। खादिर गृह्यसूत्र का ही पाठ्य इसमें भी उपलब्ध होता है।

4. **जैमिनीय गृह्यसूत्र** – यह गृह्यसूत्र गोभिल गृह्यसूत्र से कई रूपों में सम्बद्ध है। इसमें दो अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में 24 और द्वितीय में 9 कण्डिकायें हैं। इसके प्रथम अध्याय में संस्कारों का वर्णन है। द्वितीय अध्याय में श्राद्ध, अष्टकायें, अन्तयेष्टि और शान्तिकृत्य वर्णित है।

5. **कौथुम गृह्यसूत्र** – यह गृह्यसूत्र नितान्त संक्षिप्त है। इसके वर्ण्य विषयों का क्रम गोभिल गृह्यसूत्र से भिन्न है। इसमें सर्वप्रथम प्रायश्चितों का वर्णन किया गया है।

9.5.3 सामवेदीय धर्मसूत्र

1. **गौतम धर्मसूत्र** – यह धर्मसूत्र प्राचीनतम है। इसके रचयिता गौतम हैं। इसमें 28 अध्याय तथा 1000 सूत्र हैं। यह सूत्रात्मक शैली में लिखा गया है। इसकी भाषा परिष्कृत है। इसमें धर्म के स्रोत, चार आश्रमों का वर्णन, ब्रह्मचारी, गृहस्थ आदि के कर्तव्य, राजधर्म, कर, सम्पत्ति की सुरक्षा, अपराध और दण्डविधान, दायभाग आदि विषय वर्णित हैं।

9.6 अथर्ववेद के कल्प सूत्र

अथर्ववेद के निम्नलिखित कल्पसूत्र हैं –

अथर्ववेदीय श्रौतसूत्र– वैतान श्रौतसूत्र। (एकमात्र उपलब्ध है)
अथर्ववेदीय गृह्यसूत्र – कौशिक गृह्यसूत्र।
अथर्ववेदीय धर्मसूत्र – अथर्ववेद का कोई धर्मसूत्र नहीं मिलता है।
अथर्ववेदीय शुल्बसूत्र – अथर्ववेद का कोई शुल्बसूत्र भी उपलब्ध नहीं है।

अथर्ववेद के कुल दो ही कल्पसूत्र उपलब्ध हैं। इनमें एक वैतान श्रौतसूत्र है और दूसरा कौशिक गृह्यसूत्र। इनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है –

वैतान श्रौतसूत्र – वैतान श्रौतसूत्र का आधार सामवेद का गोपथ ब्राह्मण है। इसमें कुल आठ अध्याय और तैतालीस कण्डिकाएँ हैं। इसमें दर्शपूर्णमास, चातुर्मास्य, अग्निष्टोम, वाजपेय, राजसूय आदि यागों और इष्टियों का निरूपण किया गया है। श्रौतसूत्रों की परम्परा में इसे अर्वाचीन माना गया है।

कौशिक गृह्यसूत्र – यह अथर्ववेद का एकमात्र गृह्यसूत्र है। इसमें शान्ति और अभिचार कर्मों का विस्तृत विवेचन प्राप्त होता है। इस गृह्यसूत्र के 14 अध्यायों में कुल 141 कण्डिकाएँ हैं। इस ग्रन्थ में यज्ञ अनुष्ठान के अतिरिक्त अर्थशास्त्रीय, राजशास्त्रीय, शिक्षा, एकता, भैषज्य, शालानिर्माण, अभिचार कर्म तथा प्रायश्चित्त आदि महत्त्वपूर्ण विषयों का भी प्रतिपादन हुआ है। विद्वानों ने इसका रचनाकाल यास्क से पहले का माना है।

9.7 सारांश

प्रिय विद्यार्थियों! MSK005 'वैदिक वाङ्मय एवं भारतीय संस्कृति और सभ्यता' पाठ्यक्रम की इस इकाई में आपने कल्प वेदांग का अध्ययन किया। आप जानते हैं कि चारों वेदो के अपने-अपने कल्पसूत्र हैं। कल्पसूत्रों के अन्तर्गत श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र और शुल्बसूत्र परिगणित हैं। श्रौतसूत्रों के अन्तर्गत विभिन्न यज्ञों यथा

ज्योतिष्टोम, दर्शपूर्णमास, राजसूय, वाजपेय, अतिरात्र, एकाह, अहीन आदि का विवेचन किया गया है। धार्मिक दृष्टि से श्रौतसूत्रों का अत्यन्त महत्त्व है। गृह्यसूत्रों में पाकयज्ञ, संस्कार, विवाह, उपनयन, श्राद्धकर्म, दाहकर्म आदि का वर्णन प्राप्त होता है। धर्मसूत्रों में मनुष्य की विधि व्यवस्था, उसकी आचार-संहिता, नैतिक एवं धार्मिक कृत्यों का वर्णन है। इनमें चतुवर्णों के कर्तव्य कर्मों के साथ-साथ राजधर्म का वर्णन भी किया गया है। यज्ञवेदी निर्माण की प्रक्रिया में शुल्बसूत्र की महती भूमिका है। इस इकाई में आपने ऋग्वेद के कल्पसूत्रों यथा आश्वलायन, शांखायन, कौषितकि, वसिष्ठ, विष्णु आदि, यजुर्वेद के कल्पसूत्रों यथा कात्यायन, पारस्कर, बौधायन, मानव, वैखानस आदि, सामवेद के कल्पसूत्रों मशक, खादिर, गोभिल, गौतम आदि, अथर्ववेद के कल्पसूत्रों वैतान आदि का अध्ययन किया

9.8 शब्दावली

सप्तपाकयज्ञसंस्था – औपासन होमः, वैश्वदेवम्, पार्वणम्, अष्टका, मासिश्राद्धम, श्रवणा, शूलगव।

सप्तहविर्यज्ञसंस्था – अग्निहोत्रम्, दर्शपूर्णमासौ, आग्रयणम्, चातुर्मास्य, निरुढपशुबन्धः, सौत्रामणी, पिण्डपितृयज्ञादि हर्विहोम।

सप्तसोमसंस्था – अग्निष्टोमः, अत्यग्निष्टोमः, उक्थ्यः, षोडशी, वाजपेयी, अतिरात्र तथा आप्तोर्याम।

अग्न्युद्धरणम् – प्रणयन करने के लिये गार्हपत्य से आहवनीय तथा दक्षिणाग्नि को पृथक् करना ही अग्न्युद्धरण है।

उपांशुयाजः – यज्ञ करते समय कुछ ऋचाओं को उपांशु (फुसफुसाते हुए) होते हुए पढ़ा जाता है।

उल्लमुकम् – जलती हुई काष्ठ को उल्लमुक कहते हैं।

उपस्पर्शनम् – आचमन।

पृषदाज्यम् – दधिमिश्रित आज्य।

यवागू – आधा पका हुआ चावल।

9.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. कात्यायन श्रौतसूत्र – श्रीविद्याधरशर्मा गौड़, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी
2. धर्मशास्त्र का इतिहास (भाग 1–5) – श्री पी.वी.काणे, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ
3. यजुर्वेद – श्रीपाद दामोदर शास्त्री सातवलेकर, स्वाध्याय मण्डल पारडी, सूरत
4. शुक्ल यजर्वेद संहिता (मूलमात्र) – श्री वेणीराम शर्मा गौड़, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी
5. वैदिक साहित्य का इतिहास – पारसनाथ द्विवेदी, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी
6. वैदिक साहित्य तथा संस्कृति – मैक्डानल
7. वैदिक साहित्य का इतिहास – डॉ. बलदेव उपाध्याय, शारदा संस्थान, वाराणसी

8. नवीन वैदिक सञ्चयनम् – डॉ. जमुना पाठक एवं डॉ. उमेश प्रसाद सिंह, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी
9. शतपथ ब्राह्मण – डॉ. युगल किशोर मिश्र (अनुवादक), सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
10. श्रौतयज्ञ परिचय – श्री वेणीराम शर्मा गौड़, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी
11. पारस्कर गृह्यसूत्र – डॉ. जगदीशचन्द्र मिश्र, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी

9.10 अभ्यास प्रश्न

1. वेदांग किसे कहते हैं? वेदांगों के महत्त्व को समझाइए।
2. वेदांग क्या है? कल्प वेदांग को सविस्तार समझाइए।
3. यज्ञीय विधानों में श्रौतसूत्र की भूमिका का वर्णन कीजिए।
4. गृह्यसूत्र क्या है? किन्हीं दो गृह्यसूत्रों के नाम लिखिए।
5. धर्मसूत्र को विस्तारपूर्वक समझाइए।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY